International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हा शये पर खड़ी हुई वर्तमान नारी

डॉ सजीव के

अ सस्टेंट प्रोफेसर,

एन एस एस कॉलेज, ओटप्पलम

मानव समाज में नारी का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह धरती के सामान है। धरती को माँ के रूप में मानने का जो संकल्प है, वह बाउट ही सराहनीय है । वह नयी पीढ़ी को आगे बहाने की बुनियाद है। कसी भी साथ को क शश करने के लए उसमें आभूषण के तौरर पर भी नारी को जगह दे दी थी । वैदिक काल से लेकर नारी के लए कई नाम, कई अर्थ, कई परिभाषायें दे दी गयी थी । सृष्टि के प्रारंभ से नारी की उत्पत्ति के संबंध में व भन्न प्रकार के मत रहे हैं । प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन से यह ज्ञात है क वश्व के निर्माता प्रजापति आरंभ में एकाकी थे । आतएव उन्होंने स्वयं को दो भागों में वभक्त कर लया। एक भाग को पत्नी और दूसरे भाग को पति बना लया। श्री नारदीय सूक्ति के अनुसार – " इस जगत का मूल एक अदृश्य,अखंड और अ वभाज्य है, जिसे ब्रह्म कहते हैं । " (1) अथर्ववेद के अनुसार नारी उसी ईश्वर के समर्थ से उत्पन्न हुई है। सभी दर्शन शास्त्रों वशेषतः प्रवचन, दर्शन एवं मीमांसा दर्शन के अनुसार सृष्टि कार्य में नारी का बहुत कुछ प्राधान्य है । कोई उसे शक्ति के नाम से पुकारता है । " वैदिक दर्शनों में जीवन सृष्टि की दो स्वतंत्र धाराएं बतलाई गई है – स्त्री धारा और पुरुष धारा। ये दोनों एक दूसरे की पूरक मानी गई है । **"(2)** अथवा स्वच्छन्द बहने वाली धारा है ।

संस्कृत तथा हिंदी में 'नारी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वेदों में प्राप्त होता है; जिसका अर्थ है पत्नी । आरंभ से लेकर आज तक नारी शब्द का प्रयोग साधारणतया 'मादा ' के अर्थ में ही हुआ है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में भी यह यौन संबंधों के प्रतीक के रूप में ही लया गया था। कबीर के अनुसार –

"नारी कुंड नरक का, बिरला थभै बाग।

कोई साधु जन है उबहे, सब जग मूवा लग । " (3)

अर्थात् नारी संसर्ग के कुंड के समान है । कोई बिरला मनुष्य ही अपने मन रुपी अशव की लगाम को उधर जाने से रोकता है । इस तरह की साधना कोई साधु ही कर पाता है । अन्यथा संपूर्ण जगत उसके संपर्क से मृत्यु को प्राप्त हो रहा है । जहाँ-जहाँ तीनों की निंदा की गई है वहाँ नारी शब्द का प्रयोग कया गया है । ले कन आधुनिक काल में 'नारी' शब्द का प्रयोग प्रया, देवी , महिला के अर्थ में प्रयुक्त होता है । वैदिक काल से लेकर आज तक 'नारी' शब्द के लए स्त्री और महिला शब्द सबसे अ धक प्रयुक्त है । स्त्री वैदिक संस्कृत शब्द है और ऋगवेद में इस का सर्वप्रथम प्रयोग मलता है । शादी का सम्मान करनेवाली अथवा पूज्य होने के कारण नारी को महिला कहा गया है ।

नारी के इन अलग अलग नामों के आधार पर उसके स्वरूप का अंदाज़ा कया गया है। नारी को पुरुष के बराबर न माने, कोई एतराज़ नहीं। मगर उसपर बलात्कार करना, उसे पीड़ा देना आदि बातें खभी भी एक असभ्य समाज में भी न होना चाहिए। अपने साथ जीनेवाली औरत को अपने घर के पुरुष आखेट करना सभ्य समाज में कभी नहीं होना चाहिए। इस प्रकार समाज में नारी को बहुत समस्याओं को झेलना पड़ता है । कमायनिकार प्रसाद जी की ये पंक्तियाँ नारी के बारे में पूर्णतः सार्थक है।

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, वश्वास रजत नग पग पल में।
पीयूष - स्त्रोत -सी बहा करो, / जीवन के सुंदर समतल में । " (4)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारी को श्रद्धा का नाम देकर नारी समाज का ही नहीं, बल्कि मानव जीवन का सच्चा सौंदर्य प्रसाद जी ने दुनिया के सामने रखा है। नारी तो अपने नाम में ही कोमल और मंजुल है, इसी लए महाप्राण निराला जी ने यों लखा है "साहित्य के एक पृष्ठ में एक नारी मूर्ति तम के अतल प्रदेश में मृणाल दंड की तरह अपने शत -शत दलों को संकु चत - संकु लत लेकर,बाहर आलोक के देश में अपनी परिपूर्ण के साथ खुली पड़ती है । जड़ों में प्राण सं चत हो जाते हैं, अक्षय में भुवन मोहनी ज्योति: स्वरुपा नारी । "(5) नारी की लावण्यमय स्वरूप एवं आन्तरिक ज्योति पर अनोखा ब्यौरा दिया है ।

'नारी' , जीवन के हर क्षेत्र में समान रूप से कार्य सक्षम होने के वजह से सर्वत्र पुरुष के सामान रहने की अ धकारिणी है । वह मात्र पुरुष की अनुगा मनी न होकर 'सहचरी' और सहध र्मणी भी है । पुरुष का दाहिना हाथ पुरुषार्थ और कर्म का प्रतीक है तथा बायां हाथ सफलता और वजय का ।

अतः उसका स्थान पुरुष का वाम भाग में है । इसी लए नारी वामा नाम से भी जानी जाती है । नारी गृह क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में अ धक दायित्व का निर्वाह करती है, इस कारण उसका नाम 'गृहिणी' भी है । वह पुत्री,पत्नी, मादा सभी रोगों में पुरुष के लए सम्माननीय है, अतः वह महिला कहलाती है । अलग-अलग वद्वानों में नारी के लए प्रयुक्त होने वाले अलग-अलग शब्दों को रेखां कत कया है। नारी सुंदर अंगोंवाली होने से अंगना ,भयशील होने से भीरु,माता के रूप में पूजनीय होने से उसे महिषा कहा जाता है । पति का सम्मान करने के कारण महिला कहा जाता है । युव भावनाओं से युक्त होने से युवति,पुरुष उसका सम्मान करता है इस लए मेना भी कहा जाता है । नारी समाज और तहज़ीब का अटूट अंग है । वह समाज का एक हिस्सा होकर भी एक स्वतंत्र व्यक्ति एवं जीवन शक्ति है । नए सन्दर्भ और नए मूल्यों के आधार पर देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है क नारी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का अपना एक स्वतंत्र रूप है । उसका मानवीय रूप उसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रदान करता है । इन तीनों के समन्वय से ही नारी नारीत्व के शखर पर पहुँचती है ।

भारतीय समाज और संस्कृति में नारी सम्बन्धी कई धाराणाएँ रही है । " पुरुष ने नारी को दानवी कहा, देवी कहा और जब उसे यह वर्गीकरण संतुष्ट न कर सका तो कह दिया नारी एक पहेली है । प्राचीन काल से ही नारी कसी न कसी रूप में चंतन का वषय रही है । इसी लए उसे भन्न - भन्न रूपों में देखा गया है । "एक ओर नारी को देवी रूप में पूजा गया है, तो दूसरी ओर से पाप की खान ओर मात्र भोग की वस्तु समझ गया है । " (6)

धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार – " चेतना का अर्थ हम मानव मन की समझाने बुझाने की शक्ति से बौ द्धक प्रवणता,प्रवीणता,प्रेरणा अथवा भावना के रूप में प्रयुक्त करते हैं । चेतना का सीधा संबंध मानव की बु द्ध से होता है और मानव प्राणी में ही संभव है । " (7) चेतना मानव में ही जागृत होती है । अर्थात चेतना स्वयं को अपने आसपास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है । रामदरश मश्र के अनुसार –" चेदना वह तत्व है जिसमें ज्ञान का भाव और व्यक्ति क्रयाशीलता की अनुभूति है जब हम कसी पदार्थ को जानते हैं तो उसके स्वरूप का ज्ञान हमें होता है । "(8) अर्थात् चेतना जीवधारियों में रहने वाला वह तत्व है, जो उन्हें निर्जीव पदार्थों से भन्न बनाता है । दूसरे शब्दों में हम उसे मनुष्य की जीवन क्रयाओं को चलाने वाला तत्व कह सकते हैं ।

नारी की हालत पर समय समय पर देश काल के अनुसार बदलाव होता रहा है । समय के साथ भारतीय समाज में अनेक बदलाव हुए जिससे नारियों की स्थिति में दिन प्रतिदिन गरावट आती गयी। समाज के निर्माण के लए नारी की भू मका उतना महत्वपूर्ण है जितना शरीर को जी वत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रखने के लए जल, वायु और भोजन महत्वपूर्ण है । भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में नारी आजीवन पता, पति और पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करती रही है । भारत जैसे पतृसत्तात्मक समाज में नारी का शोषण एवं समस्या उसके जन्म से ही अपने परिवार में शुरू होता है । भ्रूण हत्या से लेकर सति प्रथा तक उसकी जान और ज़िन्दगी संघर्षरत राहों से गुज़रती हैं । वह पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि कई स्तर पर शोषण का शकार बनता है। उसकी ऐसी समस्याओं की शुरुआत अपनी ही घर से होती है । नारी को भ्रूण हत्या, बाल ववाह, शक्षा से फरेब ,बेमेल ववाह, दहेज, संतान हीनता, अकेलापन, यौन शोषण, मान सक शोषण, वधवा समस्या , सति प्रथा आदि कठिन बातों का सामना करना पड़ता है। ।

अंग्रेजी शक्षा का प्रभाव भारतीय नारी पर न पड़े इसी उद्देश्य उसका ध्यान आध्यात्मिक शक्षा की ओर। । माता- पता शक्षा को पाश्चात्य सभ्यता की देन समझ कर उन्हें शक्षा से वं चत रखना चाहते थे जिससे क भारतीय नारी पाश्चात्य ढंग की नारी के रंग में न रंग जाए । अंग्रेजी शक्षा को वह धर्म वहीन शक्षा समझते थे । इस लए कई समाज सुधारकों ने नारी को श क्षत बनाने के नारे लगाए, फर भी कुछ कारणों से मुख्यतः " पर्दा और बाल ववाह प्रथा ने भी बहुत दिनों तक स्त्रियों को शक्षा से वं चत रखा । " (9) इसके बाद धीरे-धीरे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज,आर्य समाज, थयोसो फकल समाज, रामाकृष्ण मशन इस क्षेत्र में आने लगे। इन संस्थाओं द्वारा कई कन्या पाठशालाएँ खोली गई । आर्य समाज ने देहरादून में कन्या पाठशाला तथा जालंघर में कन्या महा वद्यालय खोला था। कुछ नारियों ने भी इस ओर महान कदम उठाए तथा अपनी अ श क्षत बहनों को श क्षत बनाना चाहा। पूना में पण्डिता रमा बाई का नाम प्र सद्ध है जिसने केडगाँव में अनाथ बच्चों के लए भी तथा महिलाओं के लए आश्रम बनाया ओर उनकी शक्षा का आयोजन कया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अ धकतर परिवारों में अभी भी लड़ कयों को उच्च - शक्षा से वं चत रखा जाता है जिस प्रकार की शक्षा की वही रु च रखती है अक्सर देखा जाता है उन्हें माता- पता का सहयोग नहीं मलता, माता- पता का सहयोग न मलने के भी कई कारण हैं- कभी-कभी आ थक अभाव के कारण माँ - बाप पढ़ा नहीं पाते तथा लड़ कयों ऐसी शक्षा पाना चाहती है जिसमें माता- पता स्वयं ही रु च नहीं रखते और कन्याओं की इच्छाओं का दमन करते हैं। कभी कभी लड़की के सयानी हो जाने पर घर से दूर नहीं भेजना चाहते तथा अपनी आंखों से दूर रखना उनके लए असंभव है । कई बार कई माता- पता ऐसा भी सोचते हैं क उच्च शक्षा पाने के कारण लड़ कयाँ बिगड़ जाती है । इस प्रकार लड़की को श क्षत बनाने में माता- पता के सामने कई समस्याएँ आती है । इन समस्याओं का अगर समाधान नहीं होता तो उनकी लड़की अ श क्षत रह जाती है या उच्च शक्षा का पाने के साधन उपलब्ध है और श क्षत माता- पता अपनी लड़की को भी श क्षत बनाना चाहते हैं ।

वधवा होना नारी के जीवन का सबसे बड़ा संकट है जहाँ पर उसे कई नियम कानून व प्रथाओं की बे डयों में जकड़ दिया जाता है तथा उन्हें समाज के मुख्यधारा से भी अलग कर दिया जाता है । वधवा नारियाँ सामाजिक रूप से तो खत्म हो चुकी होती है परंतु वह शारीरिक रूप से अपना जीवन व्यतीत कर रही होती है । वधवावस्था नारी के लए वह समय है जो उसके रंगीन जीवन में अंधकार और उसके दामन में दुख लाचारी भर देता है । जिसके फलस्वरूप वधवा नारियाँ अपना अस्तित्व व आत्म सम्मान भी खो देती है और कदम-कदम पर अत्याचार व शोषण का शकार बनती है । " वधवा ववाह समस्या इस प्रथा ने नारी के अमानुष शोषण के साथ कई सामाजिक और आ थक समस्याओं को जन्म दिया है । यह नारी जीवन की एक ऐसी वडंबना है जो निर्दोष नारी को अनेक दोषों का मूल बना देती है हिंदू समाज में वधवा का दोहरा शोषण होता है एक और वह समस्त मानवीय अ धकारों से वं चत कर दी जाती है और दूसरी और उसके चरित्र की नाप-जोख इतनी सुक्ष्म

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और अपनी दृष्टि से की जाती है मानो हिंदू धर्म का संपूर्ण अस्तित्व ही उसके सदचरित्र पर टिका है । " (10)

हिंदू समाज में वधवा का कोई अस्तित्व नहीं है । इस समुदाय में वधवा की स्थिति बहुत ही दयनीय है जहाँ उनको बहुत सी अमानवीय कुप्रथाओं का सामना करना पड़ता है। साथी उनको अशुभ व अ भशाप के रूप में देखा जाता है । पति की मृत्यु के दौरान उससे उसकी पहचान सुंदरता, उससे उसके अ धकार सब कुछ छीन लए जाते हैं और उनको नियमों में बांध दिया जाता है। जैसे -सफेद साड़ी पहनना, सादा भोजन कटना तथा कसी भी शुभ कार्य में जाना वर्जित होता है। व उनके सर को मुडवा दिया जाता है । मृत्यु के दौरान होने वाली रस्म के अनुसार चूड़ी, संदूर, बिंदी, मंगलसूत्र आदि से सभी वस्तुएँ वधवा महिला के लए मूल्यहीन हो जाती है । तथा वह इन सभी से वं चत होना पड़ता है । हिंदू समुदाय में महिलाओं को पति की मृत्यु का जिम्मेदार मान कर समाज की मुख्यधारा से निकाल दिया जाता है । हमारी रुढ़ीवाली हिंदू समाज में महिलाओं के लए दो आदर्शों को प्रस्तुत कया है। जिसमें एक सदी प्रथा और दूसरा सन्यासी। वधवा महिला एक अशुभ का प्रतीक है जहाँ पर हमारा परंपरागत समाज पुन र्ववाह की आजादी नहीं देता है। महात्मा गांधी बरसों से चली आई इस मान सकता पर प्रहार करते कहते हैं " वदधुर पुरुष को ववाह करने का जितना अ धकार है उतना ही वधवा को भी। " (22) वधवा नारियाँ अपने जीवन में कई समस्याओं का सामना करती है।वह व भन्न धा र्मक सामाजिक नियमों में बांध दी जाती है,जिस कारण वह समाज में अलगाव महसूस करती है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । अपने जीवन को व्यतीत करने में वह बिना समाज के बिल्कुल असहाय व लाचार हो जाता है । ठीक उसी प्रकार वधवा नारियों को समाज की मुख्यधारा से अलग रखकर कठोर जीवन व्यतीत करना पड़ता है । समाज में पुत्र प्राप्ति बहुत बड़ा धर्म माना जाता है, जिस कारण पुत्र को प्रमुख दर्जा दिया जाता है व पुत्री को निम्न दर्जा दिया गया है । अतः नारी होना अ भशाप है और उससे भी बड़ा अ भशाप वधवा होना है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यांत्रिकता, बेकारी,औद्यो गकरण आदि के कारण मनुष्य का अकेलापन बढ़ता जा रहा है, आधुनिकीकरण के प्रभाव स्वरूप नारी अकेलेपन की समस्या से संत्रस्त है। इस बारे में डॉ. शीलप्रभा वर्मा लखती है – "आधुनिक समाज में एकाकी नारी जीवन का प्रचलन बढ़ रहा है । समाज एकाकी नारी के जीवन में व भन्न प्रकार की बाधाएं उत्पन्न करता है । उसे शारीरिक व मान सक कष्ट देना चाहता है।इन सभी कष्टों से जूझती हुई आज की नारी एकाकी जीवन व्यतीत करती है । " (23) मानव अगर सुखी है तो वह अपना वकास कर पाता है, ले कन दुखी समस्याओं से ग्रस्त मानव चंता में डूब रहता है । इस प्रकार मन में घुटन से भरकर जीना पड़ता है । नारियों का शोषण सर्फ शारीरिक तौर पर ही नहीं बल्कि मान सक तौर पर भी होती है । कभी-कभी चोट हृदय पर लगता है । जो देख-सुन नहीं पाता, सर्फ महसूस कया जाता है । यह मान सक अस्वास्थ्य पर कोई भी ध्यान नहीं देता।यहाँ तक की लोगों को मान सक शोषण के बारे में कोई जानकारी भी नहीं हैं ।

नारियों का शोषण कौन करता है? अगर ऐसे सवाल पूछा गया है तो हम तुरंत पुरुष कहते है । क्यों क वही हमारा रिवाज़ बन गया है । ले कन हमेशा नारी की समस्याओं का मूल कारण पुरुष नहीं होता।नारियों के शोषण में खुद नारियों का हाथ भी है । जब तक कसी नारी अपने को मुक्त करने की को शश नहीं करता तब तक वह गुलाम बनके रहेगा । नारी खुद पुरुष के दासी व उपयोगी चीज़ समझती है इस लए वह दूसरी पीढ़ी को भी ऐसा बनाकर रखने का उत्तरदायित्व लेकर बैठता है । वह अपनी ही तरह आनेवाले पीढ़ी को भी जीवन जीने का आदेश एवं निर्देश देता हैं । तदुपरांत नारी खुद शोषण का शकार बनते है और दूसरों को भी उन्हीं समस्याओं में डालते है।यह प्रथा जारी रहा। फलस्वरूप आगे -आगे नारी खुद अन्य नारी को कष्टदाएँ देने लगा। आगे चलकर उसके साथ कटु व्यवहार करने लगा । इस स्थिति का कारण नारी खुद समझ नहीं पाती की उसके साथ जो हो रहा है वह अन्याय है । उसको अपनी अ धकारों के बारे में पता नहीं । ऐसी स्थिति में नारी, नारी द्वारा शो षत रह जाएगी ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ संकेत

(1) डॉ. मंगला कप्पीकेरे : सठोत्तरी हिंदी ले खकाओं में चत्रित नारी, पृ . 16

(2) डॉ. ठाकुर वजय संह : निर्मला वर्मा के साहित्य में नारी, पृ . 51

(3) श्याम सुन्दरदास : कबीर ग्रंथावली, पृ. 42

(4) जयशंकर प्रसाद : कामायनी – पृ . 68

(5) निराला : प्रबंध पद्य (रूप और नारी शीर्षक लेख), पृ. 73

(6) अमरकोश द् वतीय खंड : मनुष्य वर्ग, पृ. 110

(7) धीरेन्द्र वर्मा : आधुनिक हिंदी शब्द कोश, पृ . 289

(8) रामदारश मश्र : साहित्य सन्दर्भ और मूल्य, पृ. 94

(9) मारगरेट ई : कजिस इं डयन वुमन हुड टुडे, पृ . 10 - 11

(10)डॉ. साधना अग्रवाल : वर्तमान हिंदी महिला कथालेखन और दाम्पत्य जीवन - पृष्ठ 183